P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-12* August- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन

Study of Teaching Efficiency and Emotional Maturity of Secondary Level Teacher Trainees

Paper Submission: 16/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

ज्योति गौतम
शोधार्थी,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
केरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान, भारत

अनामिका राठौर
शोध पर्यवेक्षक,
प्राचार्या,
चिल्ड्रन टी.टी. कॉलेज,
कोटा, राजस्थान, भारत

सारांश

इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता का क्षेत्रगत व लिंग के आधार पर अध्ययन करना। इसमें सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया व कोटा जिले के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालयों के 480 प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया गया। अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुए कि शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता में क्षेत्र के आधार पर अन्तर होता है तथा महिला व पुरुष शिक्षक की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता में भी अन्तर प्राप्त हुआ।

The objective of this study is to study the teaching efficiency and emotional maturity of secondary level teacher trainees on the basis of region and gender. In this, survey method was used and 480 trainees of teacher training colleges in rural and urban areas of Kota district were selected. After the study, the findings were found that there is a difference in teaching efficiency and emotional maturity on the basis of region and also there is difference in teaching efficiency and emotional maturity of female and male teacher.

मुख्य शब्द : शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता।
Teaching efficiency and emotional maturity.

प्रस्तावना

शिक्षा एक जीवन पर्यन्त संचालित होने वाला दीर्घकालीन अभियान है, जिसका उद्देश्य विश्लेषण, संश्लेषण और निर्णयन की संज्ञानात्मक योग्यताओं का अधिकाधिक विकास करना है। यह विवेक और विनय के गुणों को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर होने का सतत् प्रयास है। शैक्षिक प्रक्रिया अध्यापन, अधिगम और मूल्यांकन की त्रिवेणी का संगम है। किसी भी राष्ट्र का भविष्य शिक्षकों पर निर्भर करता है। अतः उनका सिद्धान्तवादी एवं दक्ष होना आवश्यक है। सभी शिक्षक जन्मजात नहीं होते हैं। बालकों में व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करने एवं सामाजिक, राष्ट्रीय उत्तरदायित्व को सम्पूर्ण तन्मयता के साथ वहन करने योग्य बनाने के लिए प्रशिक्षित अध्यापक होना अत्यन्त आवश्यक है। अतः स्पष्ट है कि अध्यापकों के लिए सेवापूर्ण एवं सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा की महती आवश्यकता है।

परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत सत्य है। समय के साथ हो रहे परिवर्तन के प्रति अपनी आँख खुली न रखने वाला समाज भविष्य में अपना अस्तित्व खो देता है। समाज को परिवर्तन के सापेक्ष बनाने का सबसे प्रमुख साधन शिक्षा है, क्योंकि शिक्षा ही समाज को प्रत्येक परिवर्तन में समायोजित होने योग्य बनाती है तथा किसी बालक के सर्वांगीण विकास व उन्नति का साधन है एवं उनके आन्तरिक गुणों को निखार देती है।

साहित्यावलोकन

सुनीता मिश्रा एवं संजना यादव (2014)[1] ने वित्त पोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में अध्ययनरत व बी.एड. प्रशिक्षुओं की शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि बी.एड. प्रशिक्षुओं की उच्च व निम्न शिक्षण अभिक्षमता का उनकी शिक्षण दक्षता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

धर एवं शर्मा (2016)[2] ने जम्मू के जवाहर नवोदय विद्यालय के पुरुष व महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला कि महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर होता है तथा 15 वर्ष से अधिक अनुभव के महिला शिक्षक, 15 वर्ष से कम अनुभव के पुरुषों की अपेक्षा अधिक प्रभावी होती है।

गुंजन भाटिया (2012)[3] ने ए स्ट्डी ऑफ फैमिली रिलेशनशिप इन रिलेशन टू इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ द स्टूडेंट्स ऑफ सैकण्डरी लेवर का अध्ययन किया। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों के पारिवारिक सम्बन्ध का संवेगात्मक परिपक्वता से सम्बन्ध ज्ञात करना था। निष्कर्ष में पाया कि स्वस्थ पारिवारिक सम्बन्ध ज्यादा प्रभावित करते हैं।

जनक सिंह (2017)[4] ने शिक्षक प्रशिक्षकों की संवेगात्मक बुद्धि का उनकी शिक्षण दक्षता पर प्रभाव का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि महिला शिक्षक प्रशिक्षकों में, पुरुषों की तुलना में अधिक होती है। भावात्मक बुद्धि व शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक सहसम्बन्ध होता है।

बार–ऑन (2005)[5] के अनुसार संवेगात्मक परिपक्वता अन्तवैयक्तिक भावनाओं एवं आवश्यकता का बोध कराने एवं पारस्परिक सहयोग, संरचनात्मक एवं परस्पर संतोषदायक सम्बन्धों को स्थापित करने एवं निभाने की योग्यता है।

हाइन (2000)[6] के अनुसार संवेगात्मक परिपक्वता को संवेगों को अनुभव करने, प्रयोग करने, सम्प्रेषित करने, उससे सबक लेने उसका प्रबंधन करने एवं उसे समझने का आंतरिक सार्मथ्य है।

वर्तमान समय में विद्यार्थियों के संवेगों में मानसिक असंतुलन व्याप्त है। प्रशिक्षण स्तर पर जबकि प्रशिक्षणार्थी शिक्षण कौशल सीखता है, जिसमें वह छात्रों से अन्तःक्रिया भी सीखता है, ऐसे में प्रशिक्षण स्तर पर संवेगात्मक परिपक्वता व शिक्षण दक्षता में संबंध ज्ञात करने हेतु अनुसंधानकर्ता का यह एक प्रयास है।

समस्या कथन

माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना करना।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना करना।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता की तुलना करना।

परिकल्पना

1. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता एवं संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के महिला एवं पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों के मध्य शिक्षण दक्षता व संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन कोटा जिले के महाविद्यालय कोटा से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय तक सीमित था।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में कोटा विश्वविद्यालय से सम्बद्ध शिक्षक प्रशिक्षक महाविद्यालय है। कुल जनसंख्या लगभग 7000 है। शिक्षक प्रशिक्षणार्थियें का चयन बहुस्तरीय न्यादर्श प्रतिचयन विधि से किया गया है। इस हेतु प्रथम स्तर पर 10 शहरी व 10 ग्रामीण कुल 20 महाविद्यालयों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन व्यवस्थित न्यादर्श विधि से किया गया है। द्वितीय स्तर पर 480 प्रशिक्षणार्थियों का चयन यादृच्छिक प्रतिचयन की पुनः व्यवस्थित न्यादर्शन विधि से किया गया है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया है :–

1. शिक्षण दक्षता के मापन हेतु स्वनिर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत उपकरण की विश्वसनीयता 0.80 है।
2. संवेगात्मक परिपक्वता के मापन हेतु डॉ. वाई. सिंह (Dr. Yashvir Singh) द्वारा निर्मित 'संवेगात्मक परिपक्वता मापनी' का प्रयोग किया गया है। इस परीक्षण की विश्वसनीयता 0.90 है।

प्रदत्त विश्लेषण, व्याख्या एवं परिणाम

सम्पूर्ण न्यादर्श से प्राप्त आँकड़ों का सारणीयन व्याख्या एवं परिणाम निम्नलिखित हैं :–

सारणी – 1

माध्यमिक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं संवेगात्मक परिपक्वता में क्षेत्रीय आधार पर सांख्यिकीय स्थिति

शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	ग्रामीण (240)		शहरी (240)		क्रान्तिक अनुपात
	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन	टी–मूल्य
शिक्षण दक्षता	90.31	13.98	94.77	15.65	3.291
संवेगात्मक परिपक्वता	95.92	18.98	100.78	17.60	2.913

उपर्युक्त सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान क्रमशः 90.31 व 94.77 है तथा टी–मूल्य 3. 291 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणीयन मान 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर है। चूँकि शहरी प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता का मध्यमान ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता अधिक होती है।

सारणी–1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि ग्रामीण व शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 95.92 व 100.78 है तथा टी–मूल्य 2. 913 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना ''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में क्षेत्र के आधार पर सार्थक अन्तर नहीं है'' अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के शिक्षण प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर होता है। चूँकि शहरी क्षेत्र के प्रशिक्षणाार्थियों का मध्यमान, ग्रामीण प्रशिक्षणार्थियों से अधिक है। अतः कहा जा सकता है कि शहरी शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता अच्छी होती है।

सारणी–2

''माध्यमिक स्तर के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता एवं संवेगात्मक परिपक्वता में क्षेत्र व लिंग के आधार पर सांख्यिकीय स्थिति''

शिक्षक प्रशिक्षणार्थी	ग्रामीण (240)					शहरी (240)				
	महिला		पुरुष		क्रान्तिक अनुपात (टी–मूल्य)	महिला		पुरुष		क्रान्तिक अनुपात (टी–मूल्य)
	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन		मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान	प्रमाप विचलन	
शिक्षण दक्षता	92.45	13.72	88.17	13.96	2.392	97.79	16.23	91.75	14.50	3.041
संवेगात्मक परिपक्वता	92.24	19.50	99.59	17.77	3.052	97.47	19.42	104.10	14.94	2.966

सारणी–2 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान क्रमशः 92.45 व 88.17 हैं व इनका टी–मूल्य 2.392 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.97 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण महिला व पुरुषों की शिक्षण दक्षता में अन्तर होता है।

सारणी–2 के अवलोकन से शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता के मध्यमान क्रमशः 97.79 व 91.75 है व इनका टी–मूल्य 3.041 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में सार्थक अन्तर होता है। वर्तमान अध्ययन का समर्थन करता है।

सारणी–2 के अवलोकन से यह भी स्पष्ट होता है कि ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान क्रमशः 92.24 व 99.59 है व इनका टी–मूल्य 3.052 है, जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है'', अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् ग्रामीण महिला व पुरुष प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर होता है।

सारणी–2 के अनुसार शहरी महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता के मध्यमान क्रमशः 97.47 व 104.10 है तथा टी–मूल्य 2.966 है जो सार्थकता स्तर 0.01 के सारणी मान 2.59 से अधिक है। अतः परिकल्पना ''शहरी क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में सार्थक अन्तर नहीं है, अस्वीकृत की जाती है। अर्थात् शहरी महिला व पुरुषों की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर होता है।

चूँकि शहरी महिला प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता का मध्यमान शहरी पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों से कम है। अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता, शहरी पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम होती है।

निष्कर्ष

शोध के उपरान्त पाया गया कि –

1. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम पाया गया।
2. ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता शहरी क्षेत्र के शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम प्राप्त हुई है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता में अन्तर पाया गया।
4. ग्रामीण क्षेत्र के महिला व पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता में अन्तर प्राप्त हुआ।

5. शहरी क्षेत्र के महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की शिक्षण दक्षता शहरी क्षेत्र के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में अधिक पायी गयी।
6. शहरी क्षेत्र के महिला शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की संवेगात्मक परिपक्वता शहरी क्षेत्र के पुरुष शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों की तुलना में कम पायी गयी।

अंत टिप्पणी

1. *मिश्रा, सुनीता एवं यादव संजना (2014), ''इम्पेक्ट ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड ऑन टीचिंग कॉम्पीटेन्सी ऑफ बी.एड. ट्रेनिंग स्टडिंग इन एडेड एण्ड नॉड एडेड कॉलिजेज'', प्ररिप्रेक्ष्य अंक 2.*
2. *धर एन. एवं शर्मा ए. (2016), ''ए स्टडी ऑफ टीचर इफेक्टिवनेस अमंग मेल एण्ड फीमेल टीचर्स टीचिंग इन जवाहर नगर नवोदय विद्यालय ऑफ प्रोक्सि'', रशियन जर्नल ऑफ साइकोलॉजी एण्ड एज्यूकेशन वॉल्यूम 49 नं. 1–2, पी.पी. 8–21.*
3. *गुंजन भाटिया (2012), ''ए स्टडी ऑफ फेमिली रिलेशनशिप इन रिलेशन टू इमोशनल इंटेलीजेंस ऑफ द स्टूडेंटस ऑफ सेकण्डरी लेवल'' इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साईंटिफिक एण्ड रिसर्च पब्लिकेशन, वॉल्यूम 2, इश्यू 12 / www.ijsrp.org/research paper 12:2/ijspr.p1210.pdf*
4. *सिंह, जनक (2017), ''इम्पेक्ट ऑफ इमोशनल इंटेलीजेन्स ऑन टीचर एज्यूकेटर्स इफेक्टीनेस'', आई जे.ए.आर.आई.आई.ई., वॉल्यूम–3, इश्यू–4, पी.पी. 2333–2347.*
5. *बार ऑन (2005), ''इमोश्नल कौशेन्ट इन्वेन्टरी (म्व्ण्प्)'' मल्टी हेल्थ सिस्टम टेक्नीकल मैन्युअल (1997).*
6. *हाईन.स. (2000),* 'ई.क्यू फोर इक्रीबाडी'', *http//org/menhtml.*
7. *मंगल, एस.के. (2004), ''मंगल इमोशनल इंटेलीजेन्स इन्वेन्ट्री'', आगरा साइक्लोजिकल रिसर्च सेल।*